रिकॉर्ड :– मरना तेरी गली में..... ॐ पिताश्री 11/9/1964

ओम् शान्ति। बच्चे जानते हैं कि शिवबाबा के गले (पि)रोने (अथवा) गले का हार बनने हम यहाँ आए हैं और इस बेहद बाप के दर पर नहीं, घर में (आ)ये हो। उनकी दर नहीं, घर कहेंगे। बापदादा–माँ का ये घर है। तुम घर में आए (हो)। तुमको कुछ माँगने का नहीं रहता है। तुमको .... ही नहीं है हम क्या माँगते। जैसे (लौकिक) बच्चा जन्म लेता है उनको मात–पिता से कुछ माँगने की आशा रहती है क्या? नहीं। ये एक लॉ है। बच्चा पैदा हुआ और मालिक बन जाता है। ये भी ऐसे है। तुम मात–पिता के बने हो तो फिर माँगने की दरकार नहीं रहती। (सोच–समझ)कर मात–पिता के तुम बने हो। जानते हो माता–पिता से हमको स्वर्ग के सुख घनेरे मिलते हैं। जैसे बच्चों को कुछ माँगना नहीं पड़ता वैसे तुमको भी कुछ माँगना नहीं है। बाप समझाते हैं, हम तुमको स्वर्ग का खज़ाना देते हैं। हर एक बात का पुरुषार्थ करना होता है। अब के पुरुषार्थ से तुम बेहद के राजा(ई) (भोगते) हो। फिर बाद में भक्तिमार्ग शुरू होता है। दुनिया के मनुष्य,विद्वान,आचार्य आदि को पता नहीं है कि भक्तिमार्ग शुरू कबसे होता है। तुम जानते हो, आधा कल्प बाद भक्तिमार्ग शुरू होता है। उनसे पहले भक्ति का चिह्न भी नहीं रहता। सतयुग–त्रेता में भक्ति होती नहीं। इस(लिए झाड़) में भी दिखाया हुआ है। आधा कल्प बाद फिर भक्ति शुरू हो जाती है। 21 जन्म इस ज्ञान का वर्सा (च)लता है। वर्सा पूरा हुआ, फिर भक्ति शुरू होती है। बाप कहते हैं, इन दान–पुण्य आदि, यज्ञ–तप आदि करने से मैं नहीं मिल सकता हूँ। मैं तो आता ही हूँ अन्त में। जो आकर मेरे बनते हैं इन्हों को वर्सा मिलता है। इसमें पूछने की बात नहीं रहती। बाप (को) बतलाना है तुम सूर्यवंशी राजधानी ले सकते हो। तुम जानते हो बाबा का बनने से हम गले का हर बन जावेंगे। सतयुग में तुम विश्व के मालिक, हार बनते हो, जिसको वैजयन्ती माला में पिरोते हो। ये है रुद्र राज...ज्ञान यज्ञ। भक्तिमार्ग में सिर्फ रुद्र यज्ञ होते हैं।

अभी तुम शिवशक्ति सेना हो– नॉन वायोलेंस, गुप्त सेना। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो, बेहद के बाप का गले हार बनते हो। जानते हो, तुम मात–पिता हम बालक तेरे..... कितने ढेर बच्चे हैं। बी०के० कितनी हैं! अच्छा, प्रजापिता ब्रह्मा किसका बच्चा है? शिवबाबा का बच्चा। तो डाडा भी एक है। बाबा भी एक है। बच्चे अनेकानेक हैं। इसलिए नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। तुम्हारा नाम ही है बी०के०। तो सिद्ध होता है तुम डाडे की पोटे–पोटियाँ हो। बेहद बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। हेविन है नई दुनिया। हेल को नई दुनिया नहीं कहेंगे। हेल है पुरानी दुनिया। हेल से हेविन ले जाने लिए ज़रूर बाप को आना पड़े। इसलिए उनका नाम ही है हेविनली गॉड फादर। हेल का मालिक तो रावण है, जिसकी मत पर मनुष्य चलते हैं। बाप कहते हैं– यह सब है आसुरी मत। पतित होने कारण ही उन्हों को असुर कहा जाता है। 5 विकार हर एक मनुष्य में हैं। नाम भी है कंस–जरासंधी, शिशुपाल, कीचक– यह सब असुरों के नाम हैं। जो बी०के० वा द्रौपदियों के पीछे पड़ते हैं उनको कीचक कहते हैं। बाप आकर इन चीर हरण करने से बचाते हैं। फिर 21 जन्म कोई चीर हरण नहीं करेंगे। नाटक में दिखाते हैं, कृष्ण द्रौपदी को साड़ी दे रहा है। तुम सब द्रौपदियाँ हो। ऐसे नहीं, द्रौपदी को 5 पति थे। यह भी रॉंग है। शास्त्रों में झूठ लिखने से फिर ऐसी–2 रसम रख दी है। कोई गुरु आया, बोला– शास्त्रों में लिखा हुआ है द्रौपदी के 5 पति थे। चक्राता तरफ 5 पति करते हैं। तो यह खराबी हुई ना! बाप कहते हैं मैं तुम सबको नगन होने से बचाता हूँ। कब भी कोई पूछे तो पहले अलफ का ही बताना है। बोलो, तुमको दो बाप है। एक है लौकिक बाप। वो तो हर जन्म में बदली होते हैं और हर जन्म में तुम बेहद के बाप को याद करते आते हो। वो है सबका बाप। भगवान तो नई दुनिया का रचने वाला है ना। यह है पुरानी दुनिया। नई दुनिया में भारत स्वर्ग था। यह तुम गोले और झाड़ पर अच्छी रीति समझा सकेंगे। भक्तिमार्ग शुरू होता है द्वापर से। ड्रामा में यह शास्त्र आदि भी नूँधे हुए हैं, जो मन कल्पित बैठ बनाते हैं। समझते हैं, आदि सनातन देवी–देवता धर्म था; परन्तु राजयोग किसने सिखाया, यह नहीं जानते। कृष्ण का नाम डाल दिया है। कृष्ण भगवानुवाच्य कहते हैं। तुमको समझाया गया है, कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। तुम कृष्ण के गले का हार नहीं बनते हो। वो तो राधे ही बनेगी। यह भी मनुष्य नहीं जानते। ऐसे थोड़े ही है कृष्ण को 16108 राणियाँ हो सकती हैं। चित्रों में तो है ही राधे–कृष्ण। बस। यह बातें तुम अभी समझते हो। बड़े–2 विद्वान आदि तो बिल्कुल ही (बुद्धू) हैं। कुछ भी नहीं जानते। अंधश्रद्धा में आए जो आया कर लिया। बुद्धिहीन, अंधे की औलाद अंधे हैं ना! रावण ने अंधा बना दिया है। अब बाप कहते हैं– सजनियाँ जागो, नवयुग आया। कलियुग के बाद फिर कौन सा युग आवेगा? त्रेता को भी नवयुग नहीं कहेंगे। पहले है सतयुग, फिर त्रेता। नया युग एक ही सतयुग को कहा जाता। बस। त्रेता को भी नहीं। तो बाप कहते हैं– बच्चे, समझते हो? निश्चय है ना! तुम ही आकर यह सब बातें समझते हो और जीते जी शिवबाबा के बनते हो। अपन को आत्मा समझते हो। शरीर का भान छोड़ अब हम आपके बने हैं। बाप कहते हैं, अब नाटक पूरा हुआ, मैं आया हुआ हूँ तुमको घर ले जाने लिए। ये है पार्ट बजाने का (मांडवा)। इनका अंत नहीं पाय सकते। तो अब बेहद के बाप को और उनके प्राप्ति को जानना तो तुम्हारे हक है। बेहद के बाप का घर कितना बेहद का बड़ा है। कितने की कोशिश करते हैं दूर–2 जाने के लिए; परन्तु अन्त पाय नहीं सकते। सागर ही सागर है। कहेंगे, सृष्टि बेअन्त है। बच्चों का ..... है ..... लेना। इसमें कुछ माँगने की दरकार नहीं। बाप कहते हैं मैं आया हुआ हूँ। अब तुम ये प्राप्ति करो। चाहे सूर्यवंशी, चाहे चंद्रवंशी राजधानी लो। अपनी सीट रिजर्व कर लो। बरोबर मम्मा–बाबा के सीट तो नामी–ग्रामी हैं। ये तो ल०ना० बनते हैं। इसको स्वराज्य कहा जाता है। ये है स्वराज्य के लिए ज्ञान का यज्ञ। तुमको स्वराज्य मिलता है। जो भी सब मनुष्य मात्र हैं, इस यज्ञ में स्वाहा होने हैं। इस

लिए इनको यज्ञ कहा जाता है। तुम जानते हो, भंभोर को आग लगेगी। तुम बाबा पास आते हो पुरानी दुनिया छोड़ देने। आप मुए मर गई दुनिया। तुम अशरीरी हो जाते हो तो कुछ है नहीं, फिर शरीर मिलता है तब दुनिया का ख्याल होता है। अब पहले तो पुरानी दुनिया को छोड़ना है। शरीर का भान छोड़ शिवबाबा के गले का हार तुम बनते हो। बाबा कहते हैं, मेरे में जो गुण हैं वो तुमको सिखलाता हूँ। कोई भी नई इन्वेन्शन निकालते हैं तो उसकी वृद्धि राजाओं द्वारा कराते हैं। यहाँ भी राजा होता तो उन द्वारा ज्ञान फैलता; क्योंकि राजा में ताकत रहती है। बाप ने तुमको नई इन्वेन्शन बतलाई है, स्वर्ग की स्थापना कैसे होती है। कितना माथा मारना पड़ता है। कोई इन्वेन्शन निकालते हैं तो गवर्मेन्ट को बतलाते हैं वृद्धि में लाने लिए। तो तुमको बेहद के बाप का परिचय देना है। तुम जानते हो, 5000 बरस पहले मुआफिक हम सहज राजयोग सीख रहे हैं। हम पढ़ रहे हैं। तुमको पूछने की भी दरकार नहीं रहती। सब कुछ आप ही बतलाते जाते हैं। इतना दिन कितना पढ़ाया है। पढ़ाते–2 अब **S.A.** देते हैं ऐसे–2 प्वाइंट्स धारण कर लिखो। बुद्धि में यह पक्का रहना है 84 जन्मों का खेल पूरा हुआ। सतयुग में तो बहुत थोड़े होते हैं। अभी तो कितने मनुष्य हैं। पूरा खाने के लिए भी नहीं मिलता। जहाँ–तहाँ से अनाज माँगते रहते। इतना सारा अन्न (इ)कट्ठा करे या बनावे, वो भारतवासी खावे सो तो कर नहीं सकते। तुम जानते हो, लड़ाई ज़रूर होगी। स्टीमर आना बन्द हो जावेगा तो डुकड़ बहुत पड़ेगा। उस समय बॉम्ब्स, नैचरल कैलेमिटीज़, मूसलधार बरसात आदि सब आपदाएँ आती हैं। मनु(ष्य) बड़ी त्राह–2 करते हैं। तुम देखेंगे ज़रूर विनाश कैसे होता है। रिहर्सल तो होती रहती है। कहते हैं, चीन–रशिया को तो हम इतने में उड़ाय देंगे। तुम बच्चे जानते हो, यह तो उड़ना ही है लड़ कर। अभी तुम समझ गए हो, यादव–कौरव–पाण्डव किसको कहा जाता और क्या कर रहे हैं। उनके प्लैन्स देखो और तुम अपना प्लैन देखो। तुम्हारा है सच्चा प्लैन। वो कहते तो हैं हम इतना अनाज देंगे जो वहाँ से कब मँगाना न पड़े। डैम्स आदि कितनी बनाते हैं, फिर टूट पड़ती हैं तो कितना नुकसा(न) हो जाता है। इसको नैचरल कैलेमिटीज़ कहा जाता है। बहुत आपदाएँ आवेंगी। तुम बच्चों को बड़ा स्थीरियम रहना चाहिए। इस पुरानी छी–2 दुनिया में कितना रहना है। तुम चाहते हो, बस, अभी सुखधाम बन जावे; परन्तु तुम तो अभी बाप के साथ हो। बहुत सेवा करते हो। हर एक को लिबरेट करते हो। पतित–पावन की तुम सेना हो। सबको पावन बनाते हो। समझाना पड़े कि 5000 बरस पहले भी हमने यह राखी बाँधी थी। सतयुग–त्रेता में फिर यह राखी बाँधने की दरकार ही नहीं रहती। फिर द्वापर से यह रसम शुरू होती है। वो है ही भक्तिमार्ग। तुम जानते हो, हम आय हैं गले का हार बनने। बच्चों को कितनी खुशी है– बस, अभी हम गए कि गए। पाप कर्म, विकर्म की गति तो समझाते रहते हैं। जो कुछ इस समय समझा रहे हैं हूबहू अक्षर ब अक्षर 5000 बरस पहले भी तुमको समझा(या) था। और कोई मनुष्य ऐसे थोड़े ही कहेंगे। हम जैसे अभी बैठे हैं ऐसे ही 5000 बरस पहले बैठे थे। तुमको सुना(या) था इन ही कपड़ों में। मनुष्य मिनट ब मिनट जो बात होती है फिर कल्प बाद यही रिपीट करेंगे। यह बात तुम्हारे सिवाय कोई के भी बुद्धि में नहीं है। वो भी जो सर्विसएबुल बच्चे हैं वो समझ सकते हैं। उन्हों की बुद्धि में ही धारणा हो सकती है। यह ध्यान में रखना है हम एक्टर्स हैं। कल्प पहले भी ऐसे पुरु(षार्थ) किया था जो अब बाप करा रहे हैं। कल्प बाद भी फिर ऐसा ही होगा। यही गीत आदि बजेंगे। कितनी वण्डरफुल समझने की बातें हैं। बाप कहते हैं इस पुराने शरीर को भी भूलना है। बेहद का बाप कहते हैं, अब अशरीरी बनो। देही–अभिमानी बनना है। आत्मा को ही दुख फील होता है ना। आत्मा कहती है, हम यह शरीर छोड़ फिर दूसरा लेंगी। यह बहुत पुराना शरीर है। अब जाना है फिर नई दुनिया में। वहाँ शरीर भी नया मिलेगा।

इसको कहा जाता है सतयुग, नई दुनिया। तुम जानते हो, बरोबर बाबा से प्रॉपटी मिल(नी) है, स्वर्ग का वर्सा मिलता है। द्वापर से लेकर अपने कर्मों अनुसार लौकिक बाप से वर्सा लेते आए हो। सतयुग–त्रेता में तो इस जन्म की पुरुषार्थ की प्रालब्ध चलती है। यहाँ से तुम प्रालब्ध बनाकर जाते हो। सतयुग–त्रेता में ऐसे नहीं कहेंगे, अच्छा वा बूरा कर्म करते हैं। ये यहाँ समझाया जाता है, कर्म यहाँ कूटने पड़ते हैं। जो करेगा वो पावेगा। अब तुम अपनी मेहनत से 21 जन्मों का वर्सा लेते हो। अब जो चाहे सो पुरुषार्थ कर लो। फिमेल भी कितना ऊँच मर्तबा पाते हैं– पहले ल० फिर ना०। तो तुम्हारा ये जन्म हीरे जैसा है। इनका मूल्य कोई .... नहीं सकते। कौड़ी जैसा जन्म में तुम कितने दुखी हो, रोना–पीटना क्या लगा हुआ है! आफतों से मनुष्यों को नींद नहीं आती। गोली लेकर आराम करते हैं। बड़ा हंगामा होना है। सारा राज्य चला जावेगा। मिलिट्री सब ये ही जाने (का) है। तुमको मिलिट्री से ही फिर राज्य मिलना है, जो बड़े–2 होंगे, जिनकी (पावर) आ जाती है; जैसे पाकिस्तान की एक मार्सल के हाथ में कितनी ताकत है। ये भी ऐसे होना है, स..... राज्य टूट पड़ता है। तुम जानते हो, हम बहुत अच्छा जन्म लेंगे। बाकी थोड़ा समय है। अब मनुष्यों के सूरत भल गौरी है, खूबसूरत है; परन्तु है कितने दुखदाई। सुयणे के पिछाड़ी बहुत पड़ते हैं। काला होना अच्छा है। काले को अभिमान नहीं रहता। सुयणे को अभिमान बहुत रहता है। इसलिए एक तो काला बनना अच्छा, दूसरा कुमारी बनना अच्छा। बाप कहते हैं, मैं कालों को जिसको ही गोरा बनाय देता हूँ। तुम जानते हो, हम जैसे हैं बेहद के मात–पिता के गले का हार बनने। बाप बेहद सुख का वर्सा दे रहे हैं। ये तो देख रहे हो समय आता जाता है। बड़ी काउंशील बनाय रहे हैं शान्ति कराने के लिए। फिर जब दो बंदर पूरा लड़ेंगे तब समझना म(क्खन) अब हम कृष्णवंशियों को मिलना है। ये है कंसपुरी, वो है कृष्णपुरी। वैश्यालय वैतरणी नदी को (पार कर) अब स्वर्ग में जाते हो। ये अ(न्तिम) जन्म है। विषय वैतरणी नदी से हम पार करते हैं। इस रौरव नर्क से हम पार करते जाते हैं। अच्छा, बाबा फिर भी कहते हैं, मेरे गले का हार बनो तब तुम विजयमाला में पिरोय जावेंगे, विष्णु के कुल में जावेंगे। अब तुम जानते हो, हम शिवबाबा के कुल निर्वाणधाम में जावेंगे। शूद्र वर्ण से बदल हम ब्राह्मण धर्म में आए थे(हैं), फिर देवता वर्ण में जावेंगे, फिर क्षत्रिय..... ये बाजोली याद कर दो तो भी बहुत अच्छा है। कितनी सहज बाजोली, इ(से) याद करने (में) टाइम नहीं लगता। भक्तिमार्ग में ऐसे बाजोली करते–2 .....पड़ जाती है। बाजोली नाम सुना है तो वो बाजोली समझ ली है। अब तुम बच्चों को बाप और वर्से को याद करना है। रावण पुरी को भूल जाना है।

तुम रोज़ ज्ञान का हनीमून करते हो। ज्ञान अमृत पीते–2 विश्व का मालिक बन जाते हो। वो मूत पीने का हनीमून करते हैं। वो तो जहर है। विकार का हनीमून करते हैं। तुम्हारा तो वो ब(न्द) है। तुम्हारा ये है ज्ञान अमृत का हनीमून, जिससे तुम देवता बन जाते हो। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे, ज्ञान सितारों प्रति मात–पिता का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ

तुम बच्चे अनुभव करते हो बरोबर; क्योंकि अवस्था पाने लिए टाइम चाहिए, तब तक कर्मभोग होता रहेगा। प्रीत लगती रहेगी। अन्त तक जितना बच्चे तीखे जावेंगे, तूफान भी जास्ती लगेंगे। कहते हैं– बाबा, तूफान बहुत आते हैं। बाबा कहते हैं, यहाँ ये तो सब होगा, मंज़िल बड़ी भारी है। तुम बच्चों की प्रतिज्ञा है कि बाबा, आप आवेंगे तो बलिहार जावेंगे। तेरे सिवाय मेरा किसमें मोह न जावेगा। तुम गारंटी करते आते हो, तो अब जन्म–जन्मांतर मूत को छोड़ देना है। बाप बच्चों को इतना पवित्र, गुल–2 बनाते हैं। बच्चों को भी सम्भालना ही है। अच्छा। ॐ